# विश्वशान्ति के लिए ब्रह्माकुमारी संस्था के बढ़ते कदम

**(प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के स्थापना के 75 वर्ष पुरे होने पर विशेष)**

आबू पर्वत मालायें तपोभूमि के रूप में जानी जाती हैं। तपस्वी गुफाओं से घिरी यहाँ की वादियों की ऊँची आध्यात्मिक गाथायें हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के १९५० से यहाँ आ जाने पर विश्व मानचित्र पर यह और ही ख्याति पाता जा रहा है। सत्यं–शिवं–सुन्दरम् की सर्वोच्च पहचान पा कर सभी धर्म–वर्ग के लोगों के नयन खुल जाते हैं। गिरते हुये मानवीय मूल्यों के पुन: जागरण के लिये दुनियाँ के हर कोने से लाखों लोग यहाँ आते ही रहते हैं। सृष्टि के उत्थान–पतन का सत्य रहस्य पा कर सभी गद्–गद् हो जाते हैं। ज्ञान–योग–धारणा–सेवा द्वारा यहाँ से प्रवृत्ति में भी पवित्रता की सुगन्ध फैलने लगती है। काम से जनसंख्या विस्फोट तो क्रोध से कलह की बाढ़ आ गयी थी। लोभ से भ्रष्टाचार तो मोह से भाई–भतीजावाद का साम्राज्य छाया हुआ था। ऐसे घोर विघटन के समय जब भारत अनेकों राजाओं की जागीर बन गया था सन् १९३७ में निराकार शिव परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध यम से ब्रह्मकुमारीज की स्थापना करवायी। भारत विभाजन के बाद इनका अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउन्ट आबू पर आते ही देश–विदेश में इनकी गतिविधियाँ बढ़ने लगीं। दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही इनकी कार्य प्रणाली को चार सोपानों में समझा जा सकता है।

## सन् १९३७ से १९६१ तक संस्थापक आत्माओं द्वारा दिव्य पालना –

दिव्य साक्षात्कारों द्वारा शिव बाबा ने प्रजापिता ब्रह्मा व जगदम्बा सरस्वती के साथ अष्ट रत्न आत्माओं द्वारा भारत में दैवी–संस्कृति की कलम लगायी। तब अनेकों को श्रीकृष्ण, श्री लक्ष्मी नारायण और मनभावन स्वर्ग के साक्षात्कार होते ही रहते थे। बच्चे–बूढ़े–जवान हजारों की संख्या में आगे बढ़ने हेतु कदम से कदम मिलाने लगे। मन में ठानते ही उन्हें लाखों सितम सहने पड़े। सिन्ध–हैदराबाद से आबू आते ही साधन–सुविधाओं के लाले पड़ गये। ऐसे संकट के समय दूसरे मतावलम्बियों द्वारा इन्हें धूल–धूसरित करने के प्रयत्न होते ही रहे। बहुत कोशिशों के बाद भ्राता जगदीश आदि के सहयोग से १९५२ में पहला सेवाकेन्द्र देहली में खोला गया। फिर तो कानपुर, लखनऊ, सहारनपुर, मेरठ, मुम्बई–बेंगलोर, अम्बाला, अमृतसर, पूना आदि अनेकों स्थानों पर राजयोग से राजायी पद की शिक्षायें दी जाने लगीं। विज्ञान भी नित नये

आविष्कारों के द्वारा रूढ़िवादिता और कर्मकाण्डों की पोल खोलने लगा था। विवेक संगत विचारध ाराओं से लोग जीवन बदलने लगे। सृष्टिचक्र व कल्पवृक्ष, त्रिमुर्ति के चित्रों के साथ—२ कभी कितावें भी छाप—२ कर सेवा संस्थानों पर भेंजी जाने लगीं। सभी शाखाओं—प्रशाखाओं के सम्पर्क सूत्र मुख्यालय आबू में मम्मा बाबा से जुड़ने लगे। पूजा—पाठ, यज्ञ—हवन की बजाय श्वेत बस्त्रधारी बहनों द्वारा मूल्यनिष्ठ जीवन बनाने की कला सीख लोग शिव बाबा के ज्ञान के अनुसार जीवन बनाने लगे। इनकी सहनशीलता व रूहानी रीतिनीति के कारण उत्पाती लोगों की बजाय जनता ब्रह्माकुमारीज का साथ निभाने लगी। भरतपुर हाउस, कोटा हाउस के बाद विश्वकिशोर (भाऊ) द्वारा १९५८ में पाण्डव भवन की जमीन ली गयी। ब्रह्मा—सरस्वती के साथ सभी ब्रह्मावत्स सवेरे दो बजे से ही सर्वआत्माओं को शुभ संकल्पों का दान देते थे। ब्रह्मचर्य आश्रम की तरह यह संस्थान का शैशव काल था।

## १९६२ से १९८६ तक विदेहीपन द्वारा विश्व सेवा —

ज्ञान—योग—धारणा—सेवा से यज्ञ वत्सों में इतना साहस भर गया कि वे हरेक परिस्थितियों में चट्टान की तरह खड़े रहते थे। १९६३ में निकाली गयी त्रिमुर्ति मासिक पत्रिका ही अब ज्ञानामृत के नाम से चल रही है। शुरू से २८ बर्षो तक कुशल संचालन करती हुई जगदम्बा सरस्वती १९६५ में पार्थिव देह को बदली कर बेहद सेवा में व्यस्त हो गयीं। दीदी मनमोहिनी के ऊपर कार्यभार आते ही सेमिनार सम्मेलनों की धूम मच गयी। संविधान बनाकर सभी सेवा स्थानों पर योग्य कार्यकर्ता नियुक्त किये गये। श्री कृष्ण, श्री लक्ष्मी नारायण के साथ अनेंकों मनभावन चित्र, प्रदर्शनी, साप्ताहिक पाठ्यक्रम व गीता महाभारत के सत्य सार जैसी अनेकों आध्यात्मिक किताबें छपीं। प्यूरिटी—बर्ल्ड रिन्यूवल जैसी मासिक पत्रिकाओं का अनेकों भाषाओं में प्रकाशन होने लगा। अपनी दिव्यता को सर्वकलाओं से भरपूर करते हुये बाबा अन्तर्मुखी बनते गये। १८ जनवरी सन् १९६९ को सम्पूर्ण जबाबदारी दादी प्रकाशमणि और दीदी मनमोहिनी को सौंप कर वे भी अव्यक्त वतन से वेहद् की सेवा करने में व्यस्त हो गये। दो शरीर और एक दिल की तरह दीदी और दादी यज्ञ को उन्नति के शिखर पर ले जाने में जी जान से जुटी रहीं। गीता ज्ञान यज्ञ के सुचारू संचालन हेतु राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान का गठन किया गया। फिर तो लाखों लोग ऊँ शान्ति का बिगुल बजाते हुय साथ निभाने को तैयार हो गये।

प्रवृति में पवित्रता की धारणा खुद खुदा ने प्रजापिता ब्रह्मा व जगदम्बा सरस्वती द्वारा

स्थापन करवायी। ब्रह्मा मुख से निकले सच्चेगीता ज्ञान (मुरली) द्वारा सबका जीवन बदलने लगा। दादी गुलजार के तन द्वारा अब भी वे ही अलौकिक सेवायें करते हुये छिपकर परिस्थितियों व प्रश्नों को हल करते रहते हैं। स्वर्ग स्थापन जैसे महान कार्य के लिये अब भी रूहानी प्यार दुलार भी लुटाते रहते हैं। सभी के स्वमान को जगाकर राजपद दिलाने हेतु बड़े पैमाने पर अनेंको मेलों व महासम्मेलनों का आयोजन किया गया। १९७४ में दादी जानकी द्वारा विदेशी सेवाओं के निमित्त बनते ही दुनियाँ के हर कोने में सेवाकेन्द्र खुलने लगे। १९८३ में ऊँ शान्ति भवन के उद्घाटन होते ही सेवा बृद्धि में चार चाँद लग गये। इसी साल जुलाई में दीदी मनमोहनी जी भी बेहद की अव्यक्त सेवा हेतु चोला बदली किया। दादी जानकी जी के १९८३ में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बनते ही अनेकों प्रकार से यज्ञ के विस्तार का शंखनाद बजने लगा। १९८५ में साइकिल—कार तथा भारत के १३ कोनों से पदयात्रायें निकली तो विदेशों में ''मिलियन मिनट्स आफ पीस अपील'' के प्रोग्राम चले। फलस्वरूप संयुक्त
राष्ट्र संघ द्वारा कयी बार यज्ञ को पीस मैनेजर एवार्ड द्वारा सम्मानित किया गया। १९८६ में राजश्व अश्वमेध अविनाशी रुद्रगीता ज्ञानयज्ञ में अपनी गोल्डेन जुबली बड़े ही धूमधाम से मनायी। पूरे देश ही नहीं विश्व भर में परमात्म अवतरण का संदेश विविध रीति से पहुँचाया गया। १०८ विजयी रत्नों द्वारा प्रभु पालना मिलती रही।

## १९८७ से २०११ बेहद वृत्ति से सर्वोच्च स्थिति —

लन्दन में ग्लोवन कोआपरेशन और रीट्रीट हाउस और आबू में ग्लोबल हास्पिटल, ज्ञान सरोबर, शान्तिवन, मनमोहिनी बन जैसे सेवा स्थान बने। इन्हीं का उदाहरण लेकर देश—विदेश में बड़े—छोटे हजारों निर्माण कार्य हुये। करोड़ो फोल्डर्स पर्चो के साथ—२ प्रजापिता ब्रह्मा पर डाक टिकट भी निकला। पत्र—पत्रिकाओं केवल, चैनल, टी.वी. इन्टरनेट, ई—मेल गीत—नृत्य—प्रर्दशनी, मेला योगशिविर सम्मेलन—महासम्मेलन, मेगा प्रोग्राम और तरह—तरह के कोर्सेज के द्वारा करोड़ों लोंगो तक प्रभु पैगाम पहुँचाने की कोशिशें हुई। अशासकीय सदस्यता के द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के कई आयोजनों में भागीदार बने। १९९६ में डाइमण्ड हाल के विशाल सभागार में ब्रह्माकुमारीज ने अपनी डाइमण्ड जुबली वेहद आध्यात्मिक तरीके से मनाई। सोलह हजार एक सौ आठ आत्माओं द्वारा ईश्वरीय सेवा का प्रसाद हर घर—गाँव—मुहल्लें—गली

शहर में बाँटने की कोशिशे हुई। सर्व के सहयोग से सुखमय संसार'' और शान्ति की संस्कृति सन् २०००'' जैसे विश्व स्तरीय कार्यो का आयोजन हुआ। अब विश्व के १४० देशों में करीब ९००० इसके सेवा केन्द्र हैं। दादी प्रकाशमणि जी के बाद अब दादी जानकी जी के निर्देशन में ९ लाख आत्माओं में आध्यात्मिक जागृति आ गयी है। ब्रह्मचर्य—गृहस्थ के बाद अब बानप्रस्थ अवस्था पूरी होते ही यज्ञ अपनी ७५वीं प्लैटिनम जुबली मनाने जा रहा है। नौ लाख तारों की तरह ये ही दिव्य आत्मायें अब जन—२ में जागृति लाकर सबको मुक्ति या जीवनमुक्ति का ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार दिलाने के निमित्त बनेंगी। इसके बाद ''टू लेट'' की बातें साक्षात दिखाई देंगी। अभी नहीं तो कभी नहीं हो जायेगा।

## २०१२ से सम्पूर्णता द्वारा स्वर्णिम युग का शुभागमन :—

पिछले ७५ बर्षो में इस रूप गीता ज्ञान यज्ञ की दुनिया के सभी भू भागों में विधिवत स्थापना हो गयी है। अब करोड़ों लोग मूल्यनिष्ठ जीवन बनाने के लिये लालापित होते जा रहे हैं। सर्व के परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमारीज को माध्यम बनाये हैं। सच्ची गीता सुनकर दैवी संस्कृति को लोग इसे सर्वमहान कहने भी लगे हैं। सभी भाषाभाषी व धर्माबलम्बी इसके ही द्वारा विश्व नव निर्माण की बातें करने लगे हैं। नौ लाख सोलह हजार एक सौ आठ रत्नों के अपनी सामर्थ्य के अनुसार सम्पूर्ण बनते ही ''अहो प्रभु तेरी लीला अपरम्पार की शहनाइयाँ सुनायी देने लगेंगी। चाँद—सितारों की तरह ऐसी आत्मायें जहाँ भी होंगी दिव्यता की मधु घोलती ही रहेंगी। उनकी आध्यात्मिक सुगन्ध सारे जहान में निर्मलता व निर्माणता लाती रहेगी। '' मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई '' का गीत गाते रहने से साधन—सुविधाओं की भरमार लग जायेगी। इसके आने वाले दस साल महा परिवर्तनकारी के साथ—साथ क्रान्तिकारी भी सिद्ध होंगे। अभी भी दिव्यता द्वारा ही जन्म—जन्मान्तर के लिये उच्चता बनेगी। शक्तिशाली राकेटों द्वारा ही पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को पार किया जाता है। उसी प्रकार '' मन मना भव '' के महामंत्र में स्थित रह कर ही देवी—देवताओं जैसा सुखदायी जीवन बनाया जा सकता है। ''अब घर जाना है'' की धुन लगी रहेगी तो ब्राह्मण जीवन के इस सन्यास आश्रम में फरिश्ता सो देवता वाली स्थिति साक्षात् दिखायी देगी। कलियुगी दुनियाँ के महाविनाश से सतयुगी दुनियाँ का स्वत: आगमन होगा।

निकट भविष्य में एक तरफ दिव्यता की जय–जयकार होगी तो दूसरी ओर महाविनाश का हाहाकार भी साक्षात दिखाई देगा। एकाग्रता की पराकाष्ठा से डिजिटल प्रणाली के सर्वोच्चता पर पहुँचते ही संकल्पों की गति से कारोबार होने लगेंगे। बुराइयों का नामो–निशान मिट जाने से ब्रह्माकुमारी संस्थान सर्व सम्पदाओं से भरे रहेंगे। स्वर्ग आगमन की पदचाप सुनते ही पेड़–पौधे , तितली–भौरें और पशु–पक्षी भी खुशियों के ढ़ोल नगाड़े बजाने का अनुभव करायेंगे। पढ़ाई–लिखाई भी खेल–पाल और कलाओं के माध्यम से होगी। छोटे–बड़े सभी भाईचारे से रहने लगेंगे। पेड़–पौधों पर बारहमासी फूल–फल आने लगेंगे। घी–दूध की भरमार होगी। मीठी–मंथर नदियों के किनारे रत्न जड़ित स्वर्णिम महल बननें लगेंगे। महाविनाश से जनसंख्या बिल्कुल कम हो जाने से कर्मो व सम्बन्धों में विश्व–बन्धुत्व की भावना दिखाई देगी। पावनता की महानता से सभी में शीतलता की मुस्कान होगी। ऐसे सुहावने संसार के नव निर्माण के लिये आइये सब कुछ सफल कर सफलता को प्राप्त करें। लक्ष्य के साथ ही साथ लक्षण भी दिखायें, जिससे लोग अच्छा बन कर दिखावें। परमपिता अपने से भी ऊँचा उठाकर सिर का ताज बनाना चाह रहे हैं। ऐसी मस्तकमणि आत्माओं से ही माँ भारती वैकुण्ठधाम कहलायेगी। सर्वत्र बैर–विरोध की बजाय एक धर्म, एक भाषा, एक राज्य की स्थापना से स्वर्णिम संसार का शुभागमन होगा।

**बीकेवार्ता फिचर्स**

www.bkvarta.com
**ब्रह्माकुमारीज् प्रथम हिंदी वेब पोर्टल**
(Brahmakumaris First Hindi Web Portal)